**Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal**
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2023 SHISRRJ | Volume 6 | Issue 6
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

# इतिहास बोध और आलोचना : एक आलोचनात्मक अध्ययन

डॉ0 माया गोला
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, परिसर, अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड।

**Article Info**
**Publication Issue :**
November-December-2023
Volume 6, Issue 6
**Page Number :** 182-190
**Article History**
Received : 02 Dec 2023
Published : 21 Dec 2023

**शोधसारांश–** रचना की संवेदनशीलता, उसकी कल्पना शक्ति का विकास सामाजिक व्यवहार से ही तय होता है और प्रत्येक सामाजिक व्यवहार का अपना इतिहास होता है और यही तत्व रचनाकार से होते हुए उसकी कृति में उपस्थित होता है और आलोचना जब अपना दायित्व निभाती है तो वह इस इतिहास बोध की प्रक्रिया को भूलती नहीं है।

**मुख्य शब्द–**इतिहास, बोध, आलोचना, संवेदनशीलता, सामाजिक, हिन्दी।

इतिहास शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत व्याकरण के दार्शनिक 'इति+ह+आस' – इन तीन शब्दों से मिलकर बना है। इन तीन शब्दों से ही 'इतिहास' शब्द की सिद्धि होती है। जिसका अर्थ है – निश्चित रूप से ऐसा हुआ।''[1] इतिहास शब्द को यदि प्राचीन भारतीय ग्रंथों में देखा जाय तो, वहां भी इसकी उपस्थिति मिलती है।

प्राचीनतम **अथर्ववेद** में –

*स वृहती दिशांअनुव्यचलत।*
*ताम इतिहासश्च पुराणं च गाथाश्चय।*
*नाराशंसी चानुव्यचलत।*

अर्थात् महान लक्ष्य (दिशा) की ओर गतिशील राष्ट्र का अनुसरण इतिहास, पुराण, गाथा तथा नाराशंसी करते हैं।[2] इतिहास को अंग्रेजी भाषा में 'हिस्ट्री' (History) कहा जाता है। 'हिस्ट्री' शब्द का इतिहास के लिए सर्वप्रथम प्रयोग यूनान के 'हेरोडोटस (Herodotus) द्वारा किया गया। हेरोडोटस का जन्म 480 ई0पू0 एशिया माइनर के हेलिकारनेसस (Halicarnassus) में हुआ था। हेरोडोटस ने ही 'हिस्ट्री' शब्द को गवेषणा एवं अनुसन्धान के सातत्य से प्रतिपादित कर सर्वप्रथम इतिहास चिंतन की आधारशिला का निर्माण किया था[3] और आज इसीलिए बेहिचक लगभग सभी विद्वान हेरोडोटस को इतिहास के जनक के रूप में देखते है। इस प्रकार से इतिहास (History) की व्युत्पत्ति अर्थ आशय–निश्चित रूप से ऐसा हुआ या ऐसा ही होता आया है के रूप में हम देख सकते हैं।

**Copyright © 2023 The Author(s):** This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)** which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

**इतिहास का अर्थ (Meaning of History)** चूँकि शुरू से ही किसी विचार, वस्तु, तथ्य आदि पर वाद–विवाद–संवाद, सहमति–असहमति होती रही है। इतिहास के अर्थ को लेकर विद्वानों के अपने–अपने तर्क रहे है। किसी ने कुछ कहा तो किसी ने कुछ।

**कार्ल आर0 पापर** [4] ने लिखा है – ''इतिहास का कोई अर्थ नहीं होता है, क्योंकि इतिहास का कोई लक्ष्य नहीं है। हम अपने लक्ष्यों को इस पर आरोपित करते हैं। इतिहास का अपना अर्थ नहीं होता है। इतिहास का अर्थ इतिहासकार द्वारा प्रदत्त होता है। इतिहासकार तथ्यों में अर्थ प्रदान करता है...।''

कार्ल कापर के अनुसार एक प्रकार से मनुष्य ही सर्वोपरि है और उसकी व्यवस्था ही सर्व–सत्य है। इतिहास–अर्थ अगर कहीं है तो इनके पिछलग्गू के रूप में।

इसी बात को **ए0 काल्हर** ने भी अपने ढंग से कही है; जिसमें मनुष्य और उसकी व्यवस्था तथा उसके उद्देश्य ही सर्वोपरि हैं– 'प्रकृति तथा इतिहास, दोनों में ही उद्देश्य तथा अर्थ का आरोपण हमारे द्वारा होता है।'[5]

आधुनिक वैज्ञानिक युग में इतिहास के अर्थ को **जी0डब्लू0एफ0 हीगल** स्पष्ट करते हुए कहते हैं – ''इतिहास, जगत के प्रति ईश्वर की परियोजना से संगति रखते हुए, नैतिक उन्नति की ओर प्रगति करता है किंतु इस प्रकार की उन्नति मनुष्य के इतिहास के उद्देश्य तथा कार्य विधि की चेतना द्वारा प्राप्त की जाती है। .....हमें यह मानना चाहिए कि इतिहास का विवरण तथा ऐतिहासिक कर्म एवं घटनाएं साथ ही घटित होते है। एक उभयनिष्ठ आंतरिक सिद्धांत दोनों को साथ लाता है।''[6]

मनुष्य स्वभावगत अपनी गलतियों से सीखता रहा है। वे गलतियां उसके अतीत–इतिहास से संबंध रखती हैं। अपने अच्छे–बुरे अतीत से मनुष्य सीखते हुए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में इतिहास–अर्थ का भी निर्माण करता है।

**गार्डनर महोदय**[7] ने इतिहास के अर्थ को स्पष्ट करते हुए बताया है कि इतिहासकार अतीत के तथ्यों पर घटनाओं का एक परिकल्पनात्मक चित्र प्रस्तुत करता है, जिसमें वर्जित घटनाएँ अर्थपूर्ण होती हैं– इसी को इतिहास का अर्थ कहते हैं।

दरअसल कोई भी सिद्धांत–दर्शन, अर्थ–परिभाषा आसमान में नहीं बनते हैं। मनुष्य अपने जीवन–अनुभव व दूसरों के जीवन–अनुभव तथा अतीत–वर्तमान से ही निर्धारित या सृजित करता है।

**डॉ0 बी0के0 श्रीवास्तव**[8] लिखते हैं इतिहास का सर्वप्रमुख अर्थ यही है कि लोग वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में इससे प्रेरणा लेकर सुखद भविष्य का निर्माण करते हैं। ऐसे में इतिहासकार का दायित्व है कि वह अतीत को अपने मस्तिष्क में सजीव कर इतिहास को एक सार्थक अर्थ प्रदान करे जिससे लोग प्रेरणा ग्रहण कर सकें।

बी0के0 श्रीवास्तव का पूरा बल मनुष्यहित में है। वह इतिहास से विशेषतः गलतियों से सीख लेकर मनुष्य अपना वर्तमान और भविष्य ठीक करे।

**डॉ0 झारखण्डे चौबे**[9] मानते हैं कि ऐतिहासिक शोध से तब तक लाभ नहीं है जब तक इतिहास का ज्ञान न हो। केवल पुस्तकीय ऐतिहासिक ज्ञान से कोई लाभ नहीं है। ऐतिहासिक शोध का स्वरूप अर्थपूर्ण होना चाहिए। प्रायः लोग कहते हैं कि मैं इतिहास नहीं जानता। उनका आशय इतिहास की पुस्तकों के पढ़ने से होता है। प्रत्येक व्यक्ति कुछ इतिहास जानता है जो वर्तमान उद्देश्यों के लिए पर्याप्त होता है। प्रत्येक व्यक्ति को अतीत कालिक घटनाओं का कुछ न कुछ ज्ञान होता है, जो न्यूनाधिक उपयुक्त होता है। कितना उपयुक्त, यह मनुष्य तथा उसके उद्देश्यों पर निर्भर करता है। यह जीवंत इतिहास पुस्तकों में बंद तथा मृत इतिहास नहीं, अपितु विविध घटनाओं, व्यक्तियों, स्थानों, संवेगों, विचारों इत्यादि द्वारा हमारे अनुभव का विस्तरण होता है, जिसकी सहायता से मनुष्य स्वयं को एक विस्तृत जगत में प्रतिष्ठित कर देख पाता है।

**इतिहास की परिभाषा (Definition of History)** विद्वानों के बीच इतिहास के अर्थ एवं व्युत्पत्ति की भांति इतिहास की परिभाषा को लेकर भी बहुत मतभेद है। इतिहास शब्द सुनने में जितना आसान सा लग रहा है। उससे कई गुना ज्यादा जटिल काम उसको किसी एक निश्चित परिभाषा में बांध पाना है।

**हेनरी जॉनसन (Henry Johnson)** ने इतिहास को भूतकाल से जोड़कर देखा है तथा उनकी अपनी मान्यता है कि अतीत में घटित प्रत्येक घटना ही इतिहास है। बकौल हेनरी, ''इतिहास विस्तृत रूप में वह प्रत्येक घटना है जो कि कभी घटित हुई है।''[10]

2. **सर चार्ल्स फर्थ (Sir Charles Firth) -** ''इतिहास मनुष्य के समाज में जीवन का समाज में हुए परिवर्तनों का, समाज के कार्यों को निश्चित करने वाले विचारों का तथा उन भौतिक दशाओं का, जिन्होंने उसकी प्रगति में सहायता की, का लेखा–जोखा है।''[11]

3. **के0एम0मुंशी** ''इतिहास मानव के संगठित योग के उत्थान व पतन की कहानी है। ऐसा संगठन अपने आधार के लिए धर्म, जाति एवं भाषा को भी रख सकता है।''[12]

4. **ई0एच0कार** की मान्यता है ''वास्तव में इतिहास, इतिहासकार एवं तथ्यों के बीच अंर्तक्रिया की अविच्छिन्न प्रक्रिया तथा वर्तमान और अतीत के बीच अनवरत परिसंवाद है ....तथ्य स्वयं नहीं बोलते, परंतु इतिहासकार उन्हें बुलवाता है। वर्तमान में रूचि इतिहासकार को अतीत के अवलोकन के लिए प्रेरित करती है क्योंकि भावी पीढ़ी के सुखद भविष्य की कल्पना सदैव उसके हृदय में रहती है।''[13]

5. **कालिंगउड** का कहना है ''कि मनुष्य क्या कर सकता है, यह जानने के लिए वह जानना चाहता है कि भूतकाल में उसने क्या किया था? इस प्रकार इतिहास आत्म–ज्ञान का एक साधन है। मनुष्य अपने अनुभवों को संचित रखना चाहता है। इस अनुभव से ही उसे ज्ञान प्राप्त होता है और कार्य करने की प्रेरणा शक्ति भी प्राप्त होती है।''[14]

6. **एस0आर0 वर्मा** ''अतीत को जानने की आकांक्षा मनुष्य मात्र का नैसर्गिक स्वभाव है। उसे जिज्ञासा होती है कि वह भूतकाल की घटनाओं को जाने। इस प्रकार की जिज्ञासा से ही इतिहास का जन्म होता है। इस जिज्ञासा से ही वह जानना चाहता है कि भूतकाल में कोई विशेष घटना किस कारण घटित हुई थी और उसका क्या परिणाम हुआ? इस प्रकार मनुष्य का यह भी स्वभाव है कि वह भूतकाल की घटनाओं के कारण

तथा परिणामों को भी जानना चाहता है। इस प्रकार प्राचीन काल से ही विश्व के सभी मानव समाजों में अतीत को जानने तथा समझने की गहन जिज्ञासा रही है और उसी जिज्ञासा के कारण हम प्राचीन काल से ही विकासमान मानव समुदायों में इतिहास का आरंभ और विकास पाते हैं।''[15]

7. **ई0 श्रीधरन** ''एक व्यापक अर्थ में इतिहास मनुष्य के उद्‌गम और विकास का व्यवस्थित लेखा जोखा है। मानव जाति के जीवन की अनूठी घटनाओं और आलोड़नों का दस्तावेज.....इतिहास मनुष्य का जीवित अतीत है। यह शताब्दियों के दौरान मनुष्य द्वारा अपने अतीत को पुननिर्मित, वर्णित और व्याख्यायित करने का प्रयास है।''[16]

8. **ओकशाट** की मान्यता है ''इतिहास, इतिहासकार का अनुभव होता है। इतिहाकार के अतिरिक्त अन्य कोई भी इसकी अनुभूति नहीं कर सकता। इतिहास लेखन का अभिप्राय इसका निर्माण होता है।''[17]

9. **झारखण्डे चौबे** ''भविष्य अंधकारमय, वर्तमान भारस्वरूप है, आत्मसंतोष के लिए अतीत का अध्ययन ही इतिहास है..... इतिहास वास्तव में ऐतिहासिक स्रोतो, अभिलेखों, संस्मरणों में वर्णित घटनाओं का न तो विवरण है और न तो अतीत तथा वर्तमान के बीच अनवरत परिसंवाद। अधिकांश घटनाएं मनुष्य की कृतियाँ होती है। उनके पीछे मानवीय मस्तिष्क की भूमिका निर्णायक होती है। इतिहासकार द्वारा इन घटनाओं के अंतस्तल में प्रवेश कर क्रिया–कलापों के परिवेश में मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है।''[18]

10. **विश्वनाथ त्रिपाठी** ''इतिहास क्या है? हमारा वर्तमान निरंतर अतीत में समाता जा रहा है। हम वर्तमान को देखते हैं। अतीत को हम नहीं देख पाते। लेकिन मनुष्य स्वभावतः इतिहास में भी झांकने का निरंतर प्रयास करता रहा है। अतीत में जाते रहने की प्रक्रिया में वर्तमान अपने कुछ चिह्न छोड़ जाता है। पुराने भवन, शिलालेख, ताम्रपत्र, सिक्के, भाषा, साहित्य, मिथक, किवदंतियां आदि ऐसी ही चीजे हैं। इन्हें इतिहास का अवशेष समझना चाहिए। इन्हीं अवशेषों के आधार पर इतिहासकार इतिहास का पुनर्निर्माण करते हैं। आज अशोक नहीं है, किंतु उसके शिलालेख हैं; अकबर नहीं है, किंतु आईने अकबरी है। इनसे जो जानकारियाँ मिलती है; उन्हीं के आधार पर इतिहास की रचना होती है। ये अवशेष ही इतिहास–लेखन की आधारभूत सामग्रियाँ हैं।''[19]

इस प्रकार देखें तो इतिहास की कोई एक निश्चित और सार्थक परिभाषा का दावा हम नहीं कर सकते हैं। **चालर्नकर्थ** के शब्दों में कहें तो इतिहास को किसी परिभाषा में बद्ध करना कोई आसान काम नहीं है। ऐसा इसलिए हो रहा है कि इतिहास को देखने–समझने का स्वनाम धन्य विद्वानों में गहरा मतभेद है। कुछ विद्वतगण तो इतिहास को कहानी के रूप में प्रस्तुत कर रहे है। ऐसे लोगों में हेनरी पिरेने रेनियर तथा एफ0एस0 ओलिवर आदि इसी प्रकार के कई नाम है जो लगातार इतिहास को केवल एक अतीत में घटी क्रमवार कहानी के रूप में देखते हैं। कुछ विद्वतगण इतिहास को कहानी की अपेक्षा सिर्फ और सिर्फ 'ज्ञान' का बड़ा पिटारा मानते है। ऐसे लोग इतिहास में घटी घटनाओं से सबक लेने की बात बार–बार उद्‌धृत करके इतिहास को चहुंमुख ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत मानते हैं। ऐसे लोगों में चार्ल्स फर्थ, लालबहादुर वर्मा, डिल्थे, क्रोचे तथा आर0जी0 कालिंगवुड आदि इसी सोच के विद्वान् हैं।

इधर बीसवीं शताब्दी के आसपास इतिहास को सामाजिक विज्ञान कहने की एक पद्धति का खूब विकास हुआ है। ऐसे इतिहासकारों में विद्वानों ने कार्लमार्क्स का नाम बार–बार लेते हैं। कार्लमार्क्स ने मानव समाज के अध्ययन में वैज्ञानिकता की कसौटी से इहितास के सामाजिक विज्ञान से बार–बार जोड़कर रेखांकित किया है। इतिहास और सामाजिक विज्ञान अपने में स्वतंत्र एक विषय भी हैं। चूंकि जब इतिहास ही सामाजिक विज्ञान होगा तो सामाजिक विज्ञान क्या होगा? इस अंतर पर **फ्रैंक वैन आल्स्ट**[20] कहते हैं– ''समाजशास्त्री मनुष्य को समय के प्रवाह से अलग करके देखता है, वह समय को स्थिर कर देता है और यही कारण है कि यह अध्ययन यथार्थ से दूर हो जाता है – मनुष्य समय के प्रवाह में जीता है और उसके जीवन का निष्कर्ष यही है कि वह गतिशील है। मनुष्य ऐतिहासिक है और इतिहास मनुष्य का अध्ययन है। इतिहास समाजशास्त्र की तरह मनुष्य को सामाजिक अंर्तसंबंधों के साथ ही नहीं देखता अपितु उसको भी समय के प्रवाह में रखकर निरंतर परिवर्तनशील विकास में भी देखता है।''

इतिहास को कुछ लोगों का कहना है कि वह संपूर्ण रूप में केवल और केवल विचारों का इतिहास है। ऐसे लोगों का मानना है कि मनुष्य की अपेक्षा उसके विचार महत्वपूर्ण हुआ करते हैं और इतिहास लिखते समय उसी का विवेचन–विश्लेषण होता है। ऐसे विद्वानों में कालिंगवुड का नाम सर्वोपरि है।

**इतिहास बोध** – साहित्य का गहरा संबंध मानव सभ्यता से है। प्रत्येक मानव सभ्यता का अपना इतिहास होता है। जब मानव–सभ्यता का इतिहास होगा तो स्वाभाविक रूप से साहित्य में ऐतिहासिकता की बातें भी मौजूद होंगी और यह बात भी सहज रूप में देखने को मिल सकती है– मानव का अपने इतिहास का गहरा–ज्ञान या ऐतिहासिक बोध। यदि हम साहित्य को स्वतंत्र और स्वायत्त नहीं मानते हैं तो साहित्य में भी ऐतिहासिक–दृष्टि या इतिहास बोध की चर्चा–परिचर्चा निश्चित है।

बकौल **लाल बहादुर वर्मा**[21] ''अतीत के प्रति मनुष्य का नैसर्गिक लगाव होता है, इतिहास इस लगाव को इतिहास बोध में बदल सकता है। संवेदना और भावना के यथार्थ को बौद्धिक यथार्थ ज्ञान और विवेक में विकसित कर सकता है। यानि उस लगाव को प्रासंगिक और उपयोगी बना सकता है।''

यह सत्य है कि सभ्य समाज का मनुष्य मुड़–मुड़कर अपने अतीत को देखता है। और कुछ–न–कुछ उससे सीखता रहता है। पर लाल बहादुर वर्मा महज इस देखने भर से इतिहास बोध प्राप्त हो सकता है; ऐसा नहीं मानते हैं। उनके अनुसार संवेदना, भावना को संशलिष्टता की कसौटी पर कसते हुए उसकी उपयोगिता और प्रासंगिकता का होना बहुत जरूरी है।

इसी अतीत जिज्ञासु के प्रति मोह की बात इतिहासकार ई0 श्रीधरन भी करते हैं। पर उनका अपना मानना है कि दुनियां में अलग–अलग मानव सभ्यताओं में इतिहास बोध की समझ अपने–अपने समयानुकूल होती रहीं है। जिसके बहुत से आंतरिक और बाह्य कारण देखने को मिलते हैं। बकौल **ई0 श्रीधरन**[22] दुनिया के विभिन्न जनसमुदायों और विभिन्न कालों में अतीत का जिज्ञासु बोध यानी ऐतिहासिक बोध एक समान मौजूद नहीं रहा है। प्राचीन यूनान और रोम तथा यहूदी एवं ईसाई धर्मों ने यूरोप से शक्तिशाली इतिहास बोध विरासत में लिया है। इतिहास के प्राचीन चीनी और मध्यकालीन मुस्लिम स्कूल उन सभ्यताओं के केंद्रीय तत्व रहे हैं। उनकी तुलना में प्राचीन एवं मध्यकाल में हिंदुओं का इतिहास बोध नगण्य रहा है।

लेकिन ऐतिहासिक बोध का अर्थ कहीं ज्यादा होता है। इतिहास की तरह की समाज विज्ञान के अन्य विषय चाहे समाजशास्त्र हो या नृतत्व शास्त्र, राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र समाज में मनुष्य की स्थिति का अध्ययन करते हैं जिसके दायरे में परिवर्तन की समस्या भी आ जाती है।''

यहाँ पर इस बात को भी समझना बहुत जरूरी है कि केवल और केवल अतीत की घुमावदार सीढ़ियों पर चक्कर पर चक्कर लगाना इतिहास बोध नहीं है। अतीत के किसी गहरे कुएं के तल पर आसन जमाकर; अपने समय को विस्मृत कर, भाषण पर भाषण देना भी इतिहास बोध नहीं है। अतीत में पूरा का पूरा बहक जाना या कहें अतीत ग्रस्तता की बीमारी कभी नहीं इतिहास बोध के करीब पहुँचने देगी।

इस अतीत ग्रस्तता और इतिहास बोध के अंतर को एस0आर0 बर्मा ने बारीकी से समझाया है। बकौल इतिहासकार **एस0 आर0 वर्मा**[23] लेकिन यहां अतीत ग्रस्तता तथा इतिहास–बोध में अंतर समझना आवश्यक है। ''अतीतग्रस्तता मनुष्य को रूढ़िवादी और संकीर्ण बनाती है। इसके विपरीत, इतिहास बोध मनुष्य को मुक्त, आशावान और प्रगतिशील बनाता है। अतीत ग्रस्तता अकर्मण्य लोगों का लक्षण है जो भूतकाल से बंधकर रह जाते हैं लेकिन इतिहास बोध अतीत को जानने का सार्थक और सनिश्चय प्रयास है। वह अतीत से ज्ञान प्राप्त करता है; वर्तमान तथा भविष्य के प्रति सजग तथा सक्रिय बनता है। अतीत ग्रस्तता मनुष्य को गतिहीन तथा कल्पनाजीवी बनाती है लेकिन इतिहास बोध मनुष्य को काल–प्रवाह समझने में सहायता करता है। इतिहास बोध के कारण ही मनुष्य अतीत, वर्तमान और भविष्य को अनवरत काल प्रवाह के रूप में देखता है। वह वर्तमान को अतीत की पृष्ठभूमि समझता है और उसी आधार पर भविष्य का निर्माण करता है। अतः इतिहास अतीत ग्रस्तता नहीं है। इतिहास से इतिहास बोध प्राप्त होता है, वह काल दर्शन देता है, समाज के निर्माण तथा उसकी दिशा को निश्चित करता है। वह प्रेरणाकारक है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि अतीतग्रस्तता नकारात्मक, जड़ अवधारणा है। इतिहास अतीत ग्रस्तता से मुक्त एक सकारात्मक अवधारणा है।''

प्रायः ऐसा देखा जाता है कि जो समाज में घटित होता है; या होने की संभावना में रहता है, वह साहित्य में भी प्रत्यक्ष या परोक्ष, मौखिक या लिखित रूप में हमें दिखाई पड़ता है। सभ्य समाज अपने अतीत में बार–बार झांकता है। उससे सीख लेता है। जब इसी समाज के द्वारा, इसी समाज के लिए साहित्य सृजित होता है; तो समाज का ऐतिहासिक ढांचा, उसका बोध साहित्य में भी दिखाई पड़ता है।

**नित्यानन्द तिवारी**[24] लिखते है इतिहास परिवर्तनों के जरिये कायम रहने और विकसित होने वाली कमजोर किंतु संभावनाशील, सामाजिक शक्तियों और बहुत शक्तिशाली, प्रभावी किंतु मानव विरोधी सामाजिक शक्तियों की पहचान करा देता है ....मनुष्य, जो किसी देश और जाति के इतिहास और वहां की सामाजिक प्रणाली के सदस्य के रूप में सिद्ध और विशिष्ट बन चुका है, वही साहित्य की वास्तविक सामग्री होती है। उसी से साहित्य की वस्तु और शैली में विविधता, व्यापकता और गहराई आती है और नित्यानंद तिवारी लिखते हैं कि यदि जीवन ऐतिहासिक सत्ता नहीं है, तो परिवर्तन, विविधता और विकास की संभावना नहीं है। समाज, धर्म, साहित्य और ज्ञान की सभी शाखाओं का इतिहास परिवर्तन के लिए आंदालनों के साक्ष्य से भरा पड़ा है और परिवर्तन के बिन्दु तथा कर्म में ही उनकी सर्जनात्मक शक्ति और सारवस्तु की मौलिकता एवं विशिष्टता अंतर्निहित है।

इसी तनावों और गतियों की प्रक्रियाओं को समझने में इतिहास बोध की महत्ता को प्रकाशचंद्र भट्ट स्वीकार करते हैं। **प्रकाशंचद भट्ट**[25] लिखते हैं इतिहास दर्शन और ऐतिहासिक दृष्टि या इतिहास बोध घटना का स्थिर रूप में अध्ययन नहीं करते अपितु उससे उत्पन्न तनावों और गतियों की प्रक्रियाओं को समझने का प्रयास करते हैं। तब इतिहास बोध प्रतिरोध और संस्कृति घटना की तरंगों या प्रक्रिया का नाम हो जाता है, जिस पर निरंतर बातचीत की जरुरत पड़ती है। प्रकाशचंद का मानना है कि इतिहास बोध की जरूरत हमें तब और होती है जब अमुक समय संकटों से भर जाता है और इतिहासबोध के अभाव में अमुक सत्ता इतिहास का अपने–मनमाने ढंग से उसका इस्तेमाल करने लगती है। एक प्रकार से इतिहासबोध को वे अपने समय के संकटों की पहिचान और उसके खिलाफ संघर्षों से मुठभेड़ करते हुए मनुष्य की स्वाधीनता से अभिन्न रूप से संबद्ध सवाल है। यानी सांस्कृतिक सवाल है।

इतिहास और इतिहास ज्ञान तथा इतिहास बोध के अर्थ आशय, अभिप्राय को लेकर विद्वानों में मतभेद है। बकौल **निर्मला जैन**[26] साहित्य किसी न किसी अर्थ में एक सीमा तक ऐतिहासिक कला होती है, इसलिए उसकी सही पहचान भी इतिहास बोध के बिना संभव नहीं होती। कहना न होगा कि इतिहास की जानकारी और इतिहास बोध पर्याय नहीं है; क्योंकि साहित्य और इतिहास भी पर्याय नहीं है, और इतिहासकार आलोचक नहीं है।

साहित्य के ज्ञान और इतिहास बोध के अंतःसंबंध पर **प्रो0 मैनेजर पाण्डेय**[27] की टिप्पणी ध्यातव्य है– साहित्य की रचना और आलोचना की अधिकांश समस्याएं साहित्य के इतिहास की समस्याएं होती हैं, इसलिए साहित्य के इतिहास बोध से ही ऐसी समस्याओं के समाधान खाजे जा सकते हैं। वास्तव में साहित्य विवेक के विकास के लिए इतिहासबोध आवश्यक है। इतिहास बोध के बिना साहित्य विवेक अंधा होगा और साहित्य विवेक के बिना इतिहास बोध लंगड़ा।

यदि ध्यान से समझा जाए तो इतिहास बोध के द्वारा किसी सभ्य–असभ्य समाज की व्यापक सामाजिकता को देखा–परखा जा सकता है। इसी इतिहास बोध की मदद से जनवादी प्रवृत्तियों के विकास को आसानी से समझा जा सकता है। **प्रो0 मैनेजर पाण्डेय**[28] यहां तक लिखते हैं कि इतिहास बोध अगर समाज के विकास में, मानव की रचनाशीलता के उत्थान में सहायक नहीं है तो वह निरर्थक है। विकास के लिए अतीत का ज्ञान ही नहीं, वर्तमान की कर्मशीलता भी आवश्यक है; इसलिए वर्तमान रचनाशीलता को दिशा और दृष्टि देने में समर्थ साहित्येतिहास ही उपयोगी होगा। इतिहास बोध का प्रयोजन समाज को उसके अतीत के रचनात्मक ज्ञान और कर्म संबंधी अनुभवों का नया अनुभव कराना है।

**इतिहास और आलोचना** – इतिहास और आलोचना का संबंध उसी प्रकार से है जैसा साहित्य और समाज का होता है। दुनियाभर के विद्वानों के बीच इतिहास और आलोचना के अंर्तसंबंध पर विवाद होता रहा है। एफ0डब्लू0 बेटसन, एफ0आर0 लीविस, रेनेवेलेक तथा इस्तवान सोतेर जैसे विद्वान इस विचार, वाद, संवाद में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिए।

इतिहास और आलोचना के संबंध पर सूक्ष्म ढंग से देखा जाए तो सबसे ज्यादा और तीखा विरोध, मतभेद रूपवादियों संरचनावादियों ने किया है। इन सौंदर्यवादियों, भाषावादियों के अनुसार रचना में विशेषतः

आलोचना की बात करें तो इनका मानना है कि इतिहास को आलोचना (सभी साहित्य की विधाओं से) से बाहर कर दिया जाना चाहिए। इनके अनुसार आलोचना में इतिहास की बिल्कुल जरूरत नहीं है। वहीं दूसरे कुछ आलोचक इतिहास बोध को आलोचना का एक अनिवार्य अंग के रूप में देखते हैं।

एक प्रकार से आलोचक या आलोचना ऐतिहासिक बोध के माध्यम से रचना व रचनाकार का मूल्यांकन करती है। एक प्रकार से समझ सकते हैं कि आलोचना इतिहास की सहायता से रचना के समाज का विवेचन–विश्लेषण करती है। शायद इसीलिए गजानन माधव मुक्तिबोध आलोचना को सभ्यता समीक्षा कहते हैं। सभ्यता समीक्षा में ऐतिहासिक प्रक्रिया व इतिहास बोध का भाव अंतर्निहित है। एक प्रकार से देखें तो जिम्मेदार आलोचक एक जिम्मेदार इतिहास भी होता है और जिम्मेदार इतिहासकार एक आलोचक भी। इतिहास बोध से आलोचना दृष्टि में गंभीरता व व्यापकता आती है और इतिहास में वस्तुपरकता के साथ–साथ नैतिक जिम्मेदारी पूर्ण आलोचना दृष्टि भी जरूरी है।

**प्रो0 मैनेजर पाण्डेय**[29] आलोचना और इतिहास के गहरे संबंध व एक दूसरे के पूरक भाव पर बल देते है। और लिखते हैं– इतिहास विवेक रचना की व्याख्या में भी सहायक होता है; क्योंकि इतिहास ही रचना का संदर्भ प्रस्तुत करता है और संदर्भ के बिना रचना की प्रामणिक व्याख्या नहीं हो सकती। आलोचक अपने इतिहास विवेक से रचना के सामाजिक, सांस्कृतिक और भाषिक संदर्भ का पुनर्निर्माण करके रचना की व्याख्या करता है.....साहित्य की विशाल परंपरा में किसी रचना की महत्ता और मूल्यवत्ता का निर्धारण ऐतिहासिक चेतना के सहारे ही हो सकता है।

इस बात को **प्रो0 मैनेजर पाण्डेय**[30] बहुत ही सूक्ष्म ढंग से लिपिबद्ध करते है ''आलोचना और इतिहास दोनों की चिंता का मुख्य विषय रचना ही है और रचना अंततः रचनाकार की चेतना की संवेदनशीलता, कल्पना शक्ति और सृजनशीलता का ही फल है। सामाजिक व्यवहार के परिवर्तन के साथ–साथ चेतना के विकास की व्याख्या करने से ही परिवेश और चेतना के संबंध का बोध प्रकट होगा और रचनाकार की चेतना की सृजनशीलता की व्याख्या भी हो सकेगी।''

सूक्ष्म अवलोकन करे तो स्पष्ट होगा कि रचना की संवेदनशीलता, उसकी कल्पना शक्ति का विकास सामाजिक व्यवहार से ही तय होता है और प्रत्येक सामाजिक व्यवहार का अपना इतिहास होता है और यही तत्व रचनाकार से होते हुए उसकी कृति में उपस्थित होता है और आलोचना जब अपना दायित्व निभाती है तो वह इस इतिहास बोध की प्रक्रिया को भूलती नहीं है।

## संदर्भ

1. इतिहास लेखन : अवधारणा, विधाएँ एवं साधन, डॉ0 बी0के0 श्रीवास्तव, एस0वी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, आगरा (उ0प्र0), पृ0 2
2. वही, पृ0 2
3. वही, पृ0 2
4. इतिहास दर्शन, डॉ0 झारखण्डे चौबे, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ0 15

5. वही, पृ0 15
6. इतिहास लेखन : अवधारणा, विधाएं एवं साधन, डॉ0 बी0के0 श्रीवास्तव, एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, आगरा (उ0प्र0), पृ0 3
7. वही, पृ0 4
8. वही, पृ0 5
9. इतिहास –दर्शन, डॉ0 झारखण्डे चौबे, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, पृ017
10. इतिहास लेखन, धारणाएँ तथा पद्धतियाँ, डॉ0 के0एल0 खुराना, डॉ0 आर0के0 बंसल, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा, पृ0 3
11. वही, पृ0 3–4
12. वही, पृ0 4
13. वही, पृ0 4–5
14. इतिहास, एस0आर0 वर्मा, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0लि0), आगरा, पृ0 2
15. वही, पृ0 1
16. इतिहास लेख एक पाठ्यपुस्तक, ई0श्रीधरन, अनुवाद मनजीत सिंह सलूजा, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृ0 1
17. इतिहास लेखन : अवधारणा विधाएं एवं साधन, डॉ0 बी0के0 श्रीवास्तव, एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, आगरा (उ0प्र0), पृ0 5
18. इतिहास–दर्शन, डॉ0 झारखण्डे चौबे, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी (उ0प्र0), पृ0 1
19. हिंदी साहित्य का सरल इतिहास, विश्वनाथ त्रिपाठी, ओरियंट ब्लैक स्वॉन, नोएडा (उ0प्र0), आमुख से उद्धृत
20. इतिहास लेखन : अवधारणा, विधाएँ एवं साधन, डॉ0 बी0के0 श्रीवास्तव, एस0बी0पी0डी0 पब्लिशिंग हाउस, आगरा (उ0प्र0), पृ0 8
21. वही, पृ0 7
22. इतिहास लेख एक पाठ्य पुस्तक, ई0 श्रीधरन, अनु0 मनजीत सिंह सलूजा, ओरियंट ब्लैकस्वॉन प्राइवेट लिमिटैड, पृ0 3–4
23. इतिहास, एस0आर0वर्मा, साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0, आगरा, पृ0 1
24. आधुनिक साहित्य और इतिहास बोध, नित्यानंद तिवारी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, पृ0 18–19
25. इतिहास बोध : प्रतिरोध और संस्कृति, प्रकाशचंद्र भट्ट, विकास प्रकाशन, कानपुर, पृ0 भूमिका से उद्धृत
26. आलोचना की पहचान : रूप–बोध और इतिहास–बोध, आलोचना का नेपथ्य, निर्मला जैन, संपा0 विश्वरंजन, शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 70–71
27. साहित्य और इतिहास दृष्टि, मैनेजर पाण्डेय, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृ0 भूमिका से उद्धृत
28. वही, पृ0 24
29. वही, पृ0 74–75
30. वही ,पृ0 87